AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रो. कल्पना कुशवाह
विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग
इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रियंका तिवारी
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र "ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन" पर आधारित है। शोध पत्र के लिए निम्नलिखित उद्देश्य रखे गये हैं : ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का अध्ययन करना। शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का अध्ययन करना। शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है तथा शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के दतिया जिले के 2 ग्रामीण एवं 2 शहरी माध्यमिक विद्यालय के 20 शहरी एवं 20 ग्रामीण छात्रों का चयन किया है। शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनके पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया तथा बुद्धिलब्धि के लिए प्रमाणीकृत उपकरण के रूप में आर. के. ओझा एवं राय चौधरी की मौखिक बुद्धिलब्धि मापनी का प्रयोग किया है। निष्कर्ष के रूप में पाया गया है कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में सार्थक अन्तर है।

मुख्य शब्द

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र, शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धि.

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा समस्त शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ है। इस स्तर पर छात्र एवं छात्राएँ किशोरावस्था में होते हैं। उनमें मानसिक एवं शारीरिक क्षमता अपनी पराकाष्ठा पर होती है। अतः इस स्तर पर शिक्षको एवं अभिभावकों का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियां को अध्ययन के दौरान अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धिलब्धि पर वातावरण के किन–किन कारकों का प्रभाव पड़ता है, इसी जिज्ञासा ने शोधार्थी की शोध समस्या को जन्म दिया। विद्यार्थी साफ–स्वच्छ वातावरण में यदि अध्ययन करते हैं तो उनकी एकाग्रता बढ़ती है तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

शैक्षिक उपलब्धि और बुद्धि में सहसम्बन्ध अवश्य दृष्टिगोचर होता है क्योंकि जिन बालका–बालिकाओं की तीक्ष्ण बुद्धि होती है वे उत्तम उपलब्धि अर्जित करते हैं। दूसरी ओर यदि बालक–बालिकाओं के आसपास का वातावरण साफ, स्वच्छ होता है तो उनका अध्ययन करने में मन लगता है और वे बिना किसी तनाव के अध्ययन करते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि

फ्रीमैन के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि वह परीक्षण है जो एक विषय विशेष या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान बोध एवं कौशल का मापन करता है।"

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य बच्चे की किसी विषय या पाठ में अर्जित ज्ञान अथवा कुशलता से है। विद्यालय, समाज तथा शिक्षक के लिए छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक है। शैक्षिक उपलब्धि जहाँ शिक्षकों की गुणवत्ता को उजागर करती है वहीं यह विद्यालय की प्रतिष्ठा एवं समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। यदि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षानुकूल नहीं होती है तो विद्यालय एवं शिक्षकों के कार्य को सार्थक नहीं माना जा सकता है।

बुद्धि

बिने के अनुसारः ''बुद्धि बोध पर आधारित खोजपरकता जो उचित ढंग से तर्क करने तथा उचित ढंग से निर्णय करने से इंगित होती है, के रूप में व्यक्त की जा सकती है।''

बुद्धि शब्द प्राचीनकाल से ही व्यक्ति की तत्परता, तात्कालिकता, समायोजन तथा समस्या समाधान की क्षमताओं के संदर्भ में प्रयोग होता रहा है। सभी व्यक्ति समान रूप से योग्य नहीं होते हैं। मानसिक योग्यता ही उनके असमान होने का प्रमुख कारण है। बुद्धिलब्धि को अंग्रेजी में Intelligent Quotient (I.Q.) कहते हैं।

प्राचीन काल से ही बालक की आयु व बुद्धि के अनुसार उसे शिक्षा दी जाती है। वर्तमान युग में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का बहुत महत्व है तथा इस प्रत्यय का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक गॉल्टन महोदय ने किया।

शोध उद्देश्य

1. ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का अध्ययन करना।
2. शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना

$\mathbf{H_{01}}$ ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$\mathbf{H_{02}}$ शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

अनुसंधान में प्रयुक्त समस्या की स्पष्ट व्याख्या हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के दतिया जिले के 2 ग्रामीण एवं 2 शहरी माध्यमिक विद्यालय के 20 शहरी एवं 20 ग्रामीण छात्रों का चयन किया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी द्वारा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनके पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया तथा बुद्धिलब्धि के लिए प्रमाणीकृत उपकरण के रूप में आर.के. ओझा एवं राय चौधरी की मौखिक बुद्धिलब्धि मापनी का प्रयोग किया है।

समस्या का परिसीमन

प्रस्तुत शोध दतिया मध्यप्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

शोधार्थी द्वारा शोध में प्रयुक्त समस्या कथन की आवश्यकता अनुसार निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान।
- प्रामाणिक विचलन।
- टी–मान।

विश्लेषण

परिकल्पना : 1

$\mathbf{H_{01}}$ ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1: ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि(20)	62.15	5.75	38	5.24
ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि (20)	78.45	12.68		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

38 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.72 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.03 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 5.24 इन दोनों मानों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में सार्थक अन्तर है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पनाः 2

$\mathbf{H_{02}}$ शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2: शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि(20)	69.95	9.70	38	4.67
शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि (20)	83.50	8.63		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

38 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.72 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.03 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 4.67 इन दोनों मानों से अधिक है अतः सार्थक है, अर्थात् शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में सार्थक अन्तर है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

तथ्यों के विश्लेषण ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। दोनों के मध्यमानों में आंशिक अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है। विद्यार्थी चाहे शहरी

हों या ग्रामीण उनकी बुद्धि के अनुसार ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि घटती–बढ़ती है। कभी–कभी छात्रों की बुद्धि उत्तम भी हो परंतु वे अच्छी शैक्षिक उलपब्धि अर्जित नहीं कर पाते हैं। वैसे विद्यार्थी अध्ययन में जितना कुशाग्र होता है उतनी ही उत्तम उसकी शैक्षिक उपलब्धि होती है। शोध के निष्कर्षानुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि में अन्तर है। शैक्षिक उपलब्धि किसी बालक की उच्च होती है तो किसी बालक की निम्न होती है। इसका मूल कारण यदि देखे तो व्यक्तिगत विभिन्नताऐं उसकी बुद्धि, आदि से प्रभावित होती हैं। कई बार विद्यालयों में मूल्यांकन प्रक्रिया में पाया गया है कि जो बालक बौद्धिक रूप से अच्छे होते हैं या जिन बालकों की बुद्धि भी अच्छी होती है, उनकी कक्षा में शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पाई गई।

सुझाव

1. शिक्षकों को विद्यार्थियों को अध्यापन के साथ–साथ प्रेरित भी करना चाहिए ताकि उनकी उपलब्धि अच्छी हो सके।
2. समय–समय पर विद्यालय में क्विज इत्यादि ज्ञान के कार्यक्रम संपन्न कराने चाहिए ताकि विद्यार्थी कुशाग्र बन सके।
3. शिक्षक को दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा पाठकीय व्याख्या करनी चाहिए।
4. शिक्षकों को ग्रामीण या शहरी दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से अध्ययन कराना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों या परिवार के सदस्यों से हमेशा कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता एस.पी. एवं गुप्ता अलका (2005), *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान,* शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
2. अस्थाना, मोहन स्वरूप (1998). *''शिक्षा एवं विद्यार्थी'',* संगम प्रकाशन, गाजियाबाद।
3. भार्गव, महेश (2010). *''आधुनिक मनोवैज्ञानिक–परीक्षण एवं मापन'',* एच.पी. भार्गव बुक हाउस 19वां संस्करण।
4. भटनागर, सुरेश (1991). *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* अटलान्टिक पब्लिशर्स, दिल्ली।
5. कैरोल (1969). *''असामान्य मनोविज्ञान'',* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. चौहान, ए. एस. (2006). *''एडवांस एजूकेशनल साइक्लोजी'',* विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

––==00==––